प्रयोजनवादी तर्क
(Teleological Argument)

यूनानी शब्द टेलीओस (Telos) का अर्थ प्रयोजन है। अतः टेलीओलाजी प्रयोजनवादी तर्क है। इस तर्क के अनुसार यह सिद्ध किया जाता है कि विश्व में व्यवस्था, सामञ्जस्य, योजना और नियमबद्धता है। इसका कारण ईश्वर ही है। यह व्यवस्था से व्यवस्थापक का अनुमान है। विश्व की व्यवस्था किसी पूर्ण चेतन शक्ति के अधीन है। इस पूर्ण चेतन-शक्ति का नाम ही ईश्वर है।[1] ईश्वर ही विश्व में व्यवस्था और सामञ्जस्य का जनक है। विश्व-व्यापी व्यवस्था का अनुभव हम प्रतिदिन करते हैं, यह व्यवस्था निष्प्रयोजन नहीं। इसका प्रयोजक ईश्वर ही है। इसीलिए गैलवे महोदय कहते हैं कि प्रयोजनात्मक तर्क का आधार विश्व-व्यापी व्यवस्था है। यह व्यवस्था अकारण नहीं सकारण है। ईश्वर ही इसका कारण है तथा व्यवस्था उसकी कृति या कार्य है।[2] यही इस तर्क का स्वरूप है।

विश्व में व्यवस्था और सामञ्जस्य का अनुभव हम प्रतिदिन करते हैं। इस व्यवस्था का अनुभव हमें दो रूपों में होता है—सामान्य नियम के रूप में तथा विशेष नियम के रूप में। सामान्य नियम व्यापक है। सामान्यतः हम देखते हैं कि प्रकृति की प्रत्येक घटना सुचारु रूप से संचालित होती है। सूरज पूरब में उदय होता है तथा पश्चिम में अस्त होता है। ऋतु-परिवर्तन एक नियमित क्रम से होता है। दिन, रात; सप्ताह, पक्ष, माह और वर्ष एक नियमित क्रम से होता है। सूर्य-ग्रहण और चन्द्र-ग्रहण भी एक नियम से ही होते हैं। इस व्यापक व्यवस्था का कारण ईश्वर ही है। व्यवस्था का विशेष रूप अभियोजना (Adjustment) के नियम में दिखलाई पड़ता है। हमारा शरीर परिश्रम से थक जाता है, शक्ति नष्टप्राय सी जान पड़ती है परन्तु पूरे शरीर में स्फूर्ति आ जाती है। शरीर में स्वतः रोग उत्पन्न होता है और

---

1. The teleological argument proceeding from the world exhibiting intelligible order to a divine intelligence as the source of that order, is very ancient.

Hick : Argument for the Existence of God, p. 1.

2. The teleological argument bases itself on the presence of order in the world, this order it takes to be the token of design and concludes that God must be the source of that design.

Scanned by TapScanner

काल-क्रम से स्वतः छूट भी जाता है। हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार वातावरण में अपने आपको सुनियोजित करते रहते हैं। विभिन्न वस्तुओं का ग्रहण और त्याग अपनी आवश्यकता के अनुसार करते रहते हैं। लगता है कि यह व्यवस्था किसी नियम के अन्तर्गत है और उस नियम का नियन्ता ईश्वर ही है।

प्रयोजनवादी तर्क बहुत ही प्राचीन है। इसके अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। मध्य युग के संत दार्शनिक ऐक्विनस ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने के लिए विख्यात हैं, उन्होंने ईश्वर की सत्ता के लिए प्रयोजनवादी प्रमाण दिया है। उनका कहना है कि संसार में अचेतन वस्तुएँ भी अपने उद्देश्य की पूर्ति में संलग्न हैं। प्रकृति की अनेक शक्तियाँ अपना-अपना कार्य कर रही हैं, इन्हें अपने उद्देश्य या प्रयोजन का ज्ञान नहीं। पूर्ण चेतन परमात्मा ही इन शक्तियों का संचालक है। उन्हीं के निर्देश के अनुसार ये शक्तियाँ अपने-अपने उद्देश्य की पूर्ति में संलग्न हैं। इससे स्पष्ट है कि अचेतन शक्तियों का संचालक चेतन परमात्मा है। विलियम पेली (**William Paley**) ने भी इस तर्क का प्रयोग किया है। उन्होंने एक घड़ी का उदाहरण देकर परमात्मा को सिद्ध करने का प्रयास किया है। उनका कहना है कि किसी निर्जन स्थान में घड़ी को प्राप्त करने वाला व्यक्ति घड़ी के निर्माता की कल्पना अवश्य करता है। घड़ी की बनावट और यन्त्र को देखकर वह व्यक्ति यह कल्पना करता है कि इसका निर्माण किसी निपुण कारीगर ने किया है। ठीक इसी प्रकार विश्व की व्यवस्था, विविधता, जटिलता आदि को देखकर परमचेतन परमात्मा का अनुमान होता है। यह व्यवस्था और विविधता साधारण चेतन व्यक्ति की शक्ति के परे है। इसका कारण तो असाधारण चेतन परमात्मा ही हो सकता है। परमात्मा प्रयोजन के अनुसार ही सांसारिक वस्तुओं का संयोजन करता है। अतः संयोजन को देखकर संयोजक का अनुमान होता है। जिस प्रकार आँखों की रचना देखने के उद्देश्य से हुई है उसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व की रचना किसी उद्दश्य या प्रयोजन से हुई है। सम्पूर्ण विश्व के प्रयोजन का ज्ञान पूर्ण परमात्मा में ही हो सकता है। विलियम पेली के तर्क को मार्टिनो महोदय और भी स्पष्ट करते हैं। मार्टिनो का कहना है कि विश्व-व्यवस्था न तो स्वतः जन्य है और न निष्प्रयोजन। इस व्यवस्था में हम चयन, संयोग और अभियोजन का प्रयोजन देखते हैं। जीवों के अंगों का चयन उनकी परिस्थिति के अनुकूल किया गया है। उदाहरणार्थ, हिंसक जानवरों के नख और दाँत तेज हैं, चिड़ियों के पंख हल्के हैं, उनमें उड़ान की शक्ति है। जल में रहने वाले जीवों के श्वांस प्रश्वांस के अंग अत्यन्त सूक्ष्म हैं। जीवों के अंगों का निर्माण भी संयोग और समायोजन के साथ किया गया है, जैसे हिंसक जन्तु के दाँत तेज हैं, अँतड़ियाँ मजबूत हैं जिससे वह अपने शिकार को मारता और खाता है। कीट, पतंग आदि में वातावरण के अनुकूल अंग-प्रत्यंग देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि इन सबों की

Scanned by TapScanner

रचना किसी उद्देश्य से की गयी है। इस उद्देश्य को निश्चित करने वाला परमात्मा है।

क्या प्रयोजनवादी तर्क विश्व-सम्बन्धी तर्क का विस्तृत रूप है

कुछ विद्वानों का कहना है कि प्रयोजनवादी तर्क विश्व-सम्बन्धी तर्क का विस्तार है। कुछ लोग यहाँ तक कहते हैं कि एक ही तर्क को दो रूपों में रखा गया है अर्थात् प्रयोजनात्मक तर्क विश्व-सम्बन्धी तर्क का रूपान्तर है। दोनों में समता अवश्य है, परन्तु तादात्म्य नहीं। कुछ बातों में दोनों सामान्य हैं परन्तु इन्हें एक नहीं माना जा सकता अथवा एक को दूसरे का रूपान्तर भी नहीं स्वीकार किया जा सकता। दोनों तर्कों का आधार विश्व या सृष्टि है। विश्व-सम्बन्धी तर्क सृष्टि से स्रष्टा का अनुमान है। कार्य अकारण नहीं हो सकता। विश्वरूपी विराट कार्य का कारण विराट परमात्मा ही हो सकता है। यह बाह्य कार्यों को देखकर कारण का अनुमान है। प्रयोजनवादी तर्क इससे सूक्ष्म है। यह विश्व व्यवस्था से व्यवस्थापक का अनुमान है। पहले के अनुसार ईश्वर कर्त्ता है, दूसरे के अनुसार ईश्वर नियन्ता है। पहले के अनुसार ईश्वर जनक है दूसरे के अनुसार ईश्वर संरक्षक है।

प्रयोजनात्मक तर्क की आलोचना—(क) काण्ट महोदय ने इस तर्क का खण्डन किया है। उनका कहना है कि इस तर्क के द्वारा ईश्वर एक प्रयोजनकर्त्ता सिद्ध होता है। जिस प्रकार शिल्पकार में शिल्पकला का उद्देश्य निहित है उसी प्रकार संसार का प्रयोजनकर्त्ता ईश्वर में। अतः ईश्वर शिल्पकार के समान है, परन्तु यह उपमा उचित नहीं। शिल्पकार सीमित तथा अपूर्ण है, शिल्प-कला का उपादान शिल्पकार से भिन्न है, वह उपादान से सीमित माना जाता है, परन्तु ईश्वर असीम और पूर्ण है। अतः उसे शिल्पकार कहना असीम को ससीम करना है। इसी दृष्टि से केयर्ड महोदय ने बतलाया है कि ईश्वर को शिल्पकार मानना तो असीम को ससीम मानना है।[1] दूसरी बात यह है कि इस तर्क से ईश्वर विश्व का निमित्त कारण सिद्ध होता है। जिस प्रकार कुम्भकार घट का निमित्त कारण है उसी प्रकार ईश्वर जगत का, परन्तु असीम और अनन्त ईश्वर को ससीम और सान्त निमित्त कारण मानना उचित नहीं।

Scanned by TapScanner